श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

महाशिवरात्रि

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

"मैं शिव हूँ, शिव सर्वश्रेष्ठ हैं"

महाशिवरात्रि के सम्मान में हुए सिद्धयोग सत्संग के समापन की ओर बढ़ते हुए, सीधे वीडिओ प्रसारण के समाप्त होने से ठीक पहले, गुरुमाई जी ने सभी को एक सुन्दर निर्देश दिया। उन्होंने हमसे इस सिखावनी का अनुभव करने के लिए कहा, "मैं शिव हूँ, शिव सर्वश्रेष्ठ हैं।"

उनके ऐसा कहते ही, मेरे लिए यह तत्काल उभरकर आया कि यह वाक्यांश उनमें से है जिनमें श्रीगुरुमाई की और उनके सिखाने के तरीक़े की अतिविशिष्टता झलकती है। यह एक सूत्र की तरह था—उद्‌बोधक, रहस्यमय, ज्ञान से समृद्ध और अपने आपमें परिपूर्ण।

मुझे इस बात का फिर से स्मरण हो आया कि सिद्धयोग पथ पर हमारे पास जो है, उस सबके लिए हम कृतज्ञ रहें। हमारे पास सदेह श्रीगुरु हैं जो निरन्तर हमें सिखावनियाँ प्रदान करती हैं। अपनी श्रीगुरु के मुख से निकला एक वाक्यांश भी, जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल देने की सामर्थ्य रखता है। अतः, यह हम पर है कि हमें जो दिया गया है, उसका हम सम्मान करें, श्रीगुरु की सिखावनियों पर चिन्तन-मनन करें और जो ज्ञान हमें प्राप्त हो, उसे हम अभ्यास में उतारें।

इसलिए, महाशिवरात्रि पर हुए सत्संग के बाद से मैं श्रीगुरुमाई की इस सिखावनी पर विचार कर रही हूँ। इसका क्या अर्थ है कि भगवान शिव सर्वश्रेष्ठ हैं? यह कहने का क्या अर्थ है, "मैं शिव हूँ, शिव सर्वश्रेष्ठ हैं?" इन शब्दों में निहित सत्य की अनुभूति करने हेतु, इन शब्दों को अपनी चेतना में बनाए रखना इतना हितकारी क्यों है?

जो सबसे पहली बात मेरे मन में आई, वह थी, भगवान शिव के अनेक नाम जिनमें से कुछ का उल्लेख मैं 'श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान' में पहले कर चुकी हूँ। सीधे तौर पर कहें तो भगवान शिव के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले सहस्र से भी अधिक विशेषणों में से अधिकतर नाम यही दर्शाते हैं कि वे *सर्वश्रेष्ठ* हैं। वे 'महेश्वर' यानी सर्वेश्वर हैं। वे 'परमेश्वर' यानी परम देव हैं। वे 'विश्वनाथ' हैं, वे 'ईशान' यानी

महाशासक हैं, सर्व ज्ञान के अधिष्ठाता हैं। वे 'शिवतर' हैं अर्थात् सर्वमंगलकारी से भी अधिक मंगलकारी हैं।

भगवान शिव के भक्तगण इन नामों से उनका आवाहन करते हैं, उनकी स्तुति करते हैं, उनसे विनती करते हैं और उनसे आशीर्वादों की याचना करते हैं। इसलिए कुछ सीमा तक ये शब्द लोगों की भक्ति की ही अभिव्यक्तियाँ हैं—जैसे, भगवान शिव सर्वश्रेष्ठ हैं, उन जैसा महान, उन जैसा मंगलमय और कोई नहीं। यदि भगवान शिव *आपके* इष्टदेव हैं, तो निस्सन्देह आप भी यही सोचेंगे कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं!

परन्तु जब मैं इस पर मनन कर रही थी तो मुझे लगा कि इस विषय को एक व्यापक नज़रिए से देखना भी सहायक होगा—अर्थात्, जब बात भगवान शिव की होती है तो सर्वोच्च श्रेणी दर्शाने वाले 'सर्वश्रेष्ठ' शब्द का वास्तविक अर्थ क्या हो सकता है, इस पर एक अधिक दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार करने से मदद मिलेगी। भारत के शास्त्रों के अनुसार, भगवान शिव साक्षात् परम चेतना ही हैं। वे ही परम सत्य हैं। उनके *अतिरिक्त* न तो कोई वस्तु है, न ही कोई व्यक्ति है, इसलिए स्पष्ट रूप से कहें तो उनसे अधिक महान, उनसे अधिक श्रेष्ठ कुछ हो ही नहीं सकता। जो भी था, जो भी है, और जो भी होगा—उस सबका वे शुद्ध सारतत्त्व हैं।

इस बारे में विचार करते-करते, मैं इतनी विस्मय से भरती गई कि मुझे अपने आपको सँभालना पड़ा। यह सत्य मन को स्तब्ध कर देने वाला है और यह ब्रह्माण्ड जैसा ही व्यापक है। यह भी एक कारण है कि मैं श्रीगुरुमाई के इस कथन की ओर इतनी आकृष्ट हुई हूँ, "मैं शिव हूँ, शिव सर्वश्रेष्ठ हैं।" एक तरह से, गुरुमाई जी इस बात को धरातल पर लाकर इसे व्यवहारिक दृष्टिकोण से समझाती हैं। वे इसे सुलभ और समझने योग्य बनाती हैं, इस तरह समझाती हैं कि हम उसका अभ्यास कर सकें। किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन उसे 'सर्वश्रेष्ठ' कहकर करने का अर्थ है, बोलचाल की भाषा में प्यार से यह कहना कि वह कितना उत्कृष्ट या अच्छा है। मेरा यह अनुभव रहा है कि जब भी मैं अपने किसी परिचित के लिए इस शब्द का प्रयोग करती हूँ तो उसके प्रति मेरे मन में स्नेह की एक लहर दौड़ जाती है और मैं अपनेपन की गहन भावना से भर जाती हूँ। वह व्यक्ति सचमुच *सर्वश्रेष्ठ* है। उसका वर्णन करने के लिए कोई भी अन्य शब्द काफ़ी नहीं होते। कोई भी अन्य शब्द इस बात के साथ न्याय नहीं कर सकते कि वह व्यक्ति क्या है और मेरे लिए उसका क्या महत्त्व है।

जब गुरुमाई जी कहती हैं, "शिव सर्वश्रेष्ठ हैं," तो मुझे लगता है कि वे हमें दिखा रही होती हैं कि हम आपस में पूरक, इन दोनों सच्चाइयों को कैसे जोड़ सकते हैं। भगवान शिव महानतम हैं, वे उच्चतम हैं,

वे परम सत्य हैं। *हमारी दृष्टि में भी,* और हमारे लिए भी वे सर्वश्रेष्ठ हैं, और वे हमें उतने ही परमप्रिय हैं व हमारे उतने ही निकट हैं जितनी की हमारी अपनी अन्तर-आत्मा।

और यह मुझे सत्संग में गुरुमाई जी द्वारा प्रदान किए गए कथन के दूसरे भाग पर ले आता है। *"मैं* शिव हूँ, शिव सर्वश्रेष्ठ हैं।" इन शब्दों को और इनका स्मरण करते रहने के अभ्यास को मैं एक मैत्रीपूर्ण व प्रेरणादायी चुनौती-सी मानती हूँ। हम भगवान शिव के जिन गुणों का स्तुतिगान करते हैं, उन्हीं गुणों को हम अपने अन्दर भी देखें तो? या फिर, यदि हम कम-से-कम यह मान लें कि हम इन गुणों का विकास करने और उन्हें प्रकट करने में सक्षम हैं तो क्या हो? यदि हम अपने लिए वही स्नेह और सम्मान महसूस करें जो हम उन लोगों के लिए करते हैं जिन्हें हम बेझिझक 'सर्वश्रेष्ठ' कहते हैं तो?

मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं पा रही हूँ कि यदि हम सब मिलकर ऐसा करें तो हम सत्संग की प्रमुख सिखावनी का पालन कर रहे होंगे। हम *मांगल्य को बढ़ा* रहे होंगे। जैसा कि हमने गुरुमाई जी से सीखा है, शान्ति हमसे ही आरम्भ होती है, उस वातावरण से जिसे हम अपने अन्दर पोषित करते हैं। हममें जो सर्वश्रेष्ठ है, यदि हम उस पर विश्वास रख सकें तो अपने आस-पास के लोगों में जो सर्वश्रेष्ठ है, उस पर विश्वास करना उतना ही आसान हो जाता है अर्थात् अपने विशिष्ट स्वभाव में, अपने मनोवेगों के उतार-चढ़ाव में, अपने व्यक्तिगत इतिहास में, सोचने व कार्य करने के अपने विशेष तरीक़ों में और साथ ही इन सबके बीच रहते हुए यदि हम इस सत्य को देख सकें कि हम कौन हैं तो अपने आस-पास के लोगों में जो सर्वश्रेष्ठ है, उस पर हम उतनी ही आसानी से विश्वास कर सकते हैं। अन्तर में वास करने वाले भगवान को अपने बाह्य जगत में भी व्याप्त देखना उतना ही अधिक सम्भव हो सकता है।

जैसाकि हम 'ॐ पूर्णमदः' मन्त्रों में गाते हैं :

ॐ। वह पूर्ण है। यह पूर्ण है।
पूर्ण से पूर्ण का उद्भव होता है।
पूर्ण में से पूर्ण ले लेने पर भी
पूर्ण ही शेष रहता है।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अब जब हमने भगवान शिव का आवाहन उनके सबसे अलौकिक रूप में कर लिया है, मैं आपसे पूछना चाहती हूँ : आपने अपने दैनिक जीवन में मांगल्य को बढ़ाने के लिए, कौन-से क़दम जागरूकतापूर्वक उठाए हैं? क्या आपने अपने दिन के दौरान, ख़ासकर महाशिवरात्रि के सम्मान में श्रीगुरुमाई के साथ हुए

सत्संग के बाद, इस अभ्यास के लिए समय निर्धारित किया है कि आप 'मैं शिव हूँ' के बोध को विकसित कर सकें?

यदि हाँ, तो इस श्रेष्ठ प्रयास ने आपकी साधना को किस प्रकार रूपान्तरित किया है? आपके जीवन में जो लोग हैं, क्या उन्होंने आप में कुछ अलग बात महसूस की है? क्या उन्होंने आपको यह बताया है कि आपकी संगति में रहना उन्हें कितना प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक लगता है?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।